बंजारा संस्कृति

रमेश मनोहर लमाणी
द फोर्ब्स अकादमी गोकाक फॉल्स

किसी भी प्रदेश की संस्कृति को जानना हो तो वहाँ के लोक जीवन का अध्ययन अनिवार्य होता है। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ अनेक धर्मवलंबी लोग वास करते हैं। अनेक धर्म जाति-उपजाति में बँटे हुए है। हिन्दु धर्म में बंजारा लोगों की अपनी ही एक विशेष जाति है, जो अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नाम से जानी जाती है। सारे भारत में यो लोग फैले हुए है।

बंजारा समाज भारतीय जन जातीय समाज में अपनी भाषा-संस्कृति के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। बंजारे की संस्कृति राजस्थान प्रांत की होने के कारण आज भी बंजारों की वेश-भूषा, नीति-रिवाज रहन-सहन और विविध संस्कार राजस्थानी संस्कार से मेल खाती है।

भारत देश में कर्नाटक एक राज्य है। जहाँ सबसे ज्यादा बंजारा समुदाय के लोग बसे हुए हैं। यहाँ की बंजारा संस्कृति तथा लोक साहित्य भी समृद्ध है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को महत्वपूर्ण करने में बंजारों का सहयोग सदा स्मरणीय रहेगा। साहित्य का विकास करने में लोगों का योगदान उल्लेख है। धार्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तन में बंजारों की प्रगतिशील बड़ी उपयोगी सिद्ध हैं। पुरातन संस्कृति के पहरेदार ये स्वाभिमानी बंजारे कभी झुकते नहीं। विशाल भारत के विभिन्न भूभागों में निवास करनेवाले इन साहसी सपुतों की गौरव गाथाएँ बड़ी ओजपूर्ण है, जिन्हें सुरक्षित रखना प्रत्येक भारतीय का आद्य कर्तव्य है। ये निसर्ग प्रेमी लोग है। उनके रंग-बिरंगे काँचदार कपड़ों को दोखने से ऐसा लगता है कि यही बंजारा लोग है। इन लोगों के संस्कृति का इतिहास बहुत पुराना है। स्वयं कला के सदारे कपड़ों पर धागों से चित्र खींचते है। और उनके ऊपर काँच, सिक्कों को रखकर धागों से सिलाई करते हैं। देखनेवालों को ऐसा लगता है कि बंजारा लोग बड़े कला प्रेमी है।

आदिवासी बंजारा लोगों की महिलाएँ फेटिया को खूब आकर्षक कसूति से बनाती है। बंजारा औरतें अपने खाली समय में पहनाव के कपड़ों पर बटन टिकली घूँघरू बाँधना सिक्कों का मथुना आदि कई प्रकार से ओढ़नी काँचली छाटिया को आकर्षक बनाते है। एक और खास बात यह है कि उनके एक-एक कपड़े बनाने के लिए साल भर का समय लग जाता है। एक आकार का बाहरी एवं भितरी कपड़ों को जोड़कर उसके ऊपर कसूती बनाकर आकार देते है।

आज इक्कीसवी सदी में बंजारों में भी परिवर्तन आ चुका है। अपनी संस्कृति के सूचक कपड़ों से उनका व्यामोह कम हो चुका है। बनाने का तो बात दूर उनका धारन करा भी शरम की बात मानते है। अन्य महिलाओं के समानवे भी फैशन दुनिया के फिदे पड़े हुए है। एक जमाने में बचपन से लड़कियों को कसूती कार्य सीखाना पसंद करते थे। परन्तु आज उसके तरफ मुडकर भी देखते नहीं हैं। उनकी संस्कृति उन्हीं से लुप्त होती जा रही है। यही एक बड़ी सोचनीय बात है। आज ये लोग वेश-भूषा को पहनना छोड़ दिये हैं और देश-विदेशों में इनके वेश-भूषा को बहुत माँग हैं। और फिल्मों मं इनके वेश-भूषा को पहनते हैं। ताजुब कि बात यह है कि आज बंजारों की महिलाएँ वेश-भूषा पहनना छोड़ दिये हैं और फिल्मों में विदेशों में इनके पहने हुए पुराने संस्कृति के कपड़ों को खरीदकर ले जाते है। इससे पता चलता है कि इनकी संस्कृति कितनी श्रीमंत है।

बंजारा पुरुषों के पहनावे ऐसी कोई खास नहीं है। उनके सर पर बाँधे जानेवाले पगड़ी को वे 'पागड़ी कहते हैं। उनमें इस पागड़ी को विशेष महत्व है। आपसे मिलने पर राम-राम बोलते है। उस समय पर सर पर पागड़ी का रहना शुभ सूचक माना जाता है। बाकी कुर्ता धोती का पहनना आम बात है।

इनका धर्म गुरू श्री सेवालाल महाराज है। श्री सेवाभाया के मंदिर के सामने सब लोग इकट्ठा होते हैं। कोई विशेष तिज त्योहारों के संदर्भ में एक साथ मिलकर अनेक प्रकार के गीतों को गाते हैं। जैसे बंजारा लोक गीत, संस्कारी गीत श्रंगार गीत, धार्मिक गीत आदि ।इस तरह अनेक प्रकार के गीतों को गाते हुए सब महिलाएँ घिरकर नाचने लगती है। वह नाच-कूदकर अपने कष्टों को भूल जाते हैं और कोई भी काम को मेहनत और परिश्रम के साथ करते है।

सभी जातियों में अपने जाति की पंचायत होती है। जो केवल न्याय करने का कार्य ही नहीं करती बल्कि सामाजिक व्यवस्था को बनाये रकने का कार्य भी करती है। भारत में अनेक जाती पंचायते इतनी सशक्त होती है कि ये चोरी से ले कर हत्या तक के मामलों को निपटारा करती है। बंजारा की अपनी एक विशिष्ट न्याय प्रणालिका है। जिसे आम तौर पर जाती पंचायति के नाम से जाना जाता है, किन्तु बंजारों में इसे 'मळावो कहते हैं। बंजारा समाज में आज भी छोटे-बड़े झगड़े, चोरी-चाकरी, हत्या, व्यभिचार संबंध-विच्छेद जैसे के महत्वपूर्ण मसलों का निपटारा इसी मळावो के अंतर्गत ही होता है। 'मळावो में पंचों की महत्वपूरण भूमिका रहती है। पंचों को आदर से पटेल साहब-नायक साबह करते हैं।

मळावे द्वारा की जाने वाली सजाएँ जन प्रचलित होती है। जैसे – 'ओळबो' के नाम से भी जाना जाता है। इस सजा के अंतर्गत अपराधी व्यक्ति के हाथ से हुक्का और पानी लेने के हक से उसे वंचित कर दिया जाता है। और बिरादरी के लोगों से भी उसके हाथा हुक्का पानी लेने से इन्कार कर के उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। जिसे 'हुक्का पानी बंद करना' के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार मळावो बंजारा समाज की एक अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है।

'गोरबोली' पर काफी मात्रा में हिन्दी का प्रभाव पडा है। वास्तव में बंजारों कि कोई लिपि नहीं है। परन्तु प्रांतीय लिपियों में उसका साहित्य मंद गति से निर्माण हो रहा है। मौखिक साहित्य तो है ही लेकिन कश्मिर स कन्याकुमारी तक बसे हुए बंजारों को अपने विचारों का आदान-प्रदान करने लिए लिपिका अवश्यकता है।

भोलानाथ तिवारी अपने शोध-ग्रंथ में बताते है कि जिप्सी धुमंतू लोगों की भाषा है। जिन्हें हबूडी, रोमनी, बंजारा और बंजारी वगैरा भी कहते है। जिप्सी भाषा मूलतः भारोपीय परिवार की है। 5वी सदी ई.पू में बंजारा या जिप्सी भाषा के पूर्वज इधर-उधर फैल गये। कुछ लोग भारत के बाहर चले गये और कुछ लोग भारत के अलग-अलग प्रदेशों में चले गये। इस तरह देखा जाये तो इनके भाषा मूलतः 5वी सदी ईसा पूर्व से प्राकृत भाषा से संबंध है।

डॉ.ग्रियर्सन अपने अध्ययन में बताते हैं कि बंजारा सार भारत में पश्चिम और दक्षिण प्रदेशों में संचार करनेवाले भ्रमण शील जात की भाषा है। सेंसस ऑफ इंडिया, मदर टंग के वोंमेर तहन सन 1961 में जनगणना रिपोट में बंजारा बोली राजस्थानी के चौदह उप बोलियों में एक है।

देश के बहुत सारे भाषाओं को नागरी लिपि ने स्वीकार किया है। जिसमें संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, मैथिली, हरयाणवी, राजस्थानी, सिंधी, संथाली, बोडो, ढोगरी, गढवाली, कुमाऊनी, नेपाली वगैरा। आज भारत के लग-भग पाठशालाओं में हिन्दी भाषा के माध्यम से नागरी लिपि का बोध हो रहा है।

विद्वानों से निवेदन है कि बंजारा भाषा के लिए हम देवनागरी लिपि का प्रयोग करके विशाल बहुमुखी बंजारों का लोक साहित्य को लिपिबद्ध करें ताकि भारतीय संस्कृति के धरोहर बंजारा लोक संस्कृति का रक्षा हो सकें।